अभ्यास–

(क) इन वाक्यों में विशेष्य और विशेषण बताओ।

(१) वर्षा ऋतु में अधिक पानी पड़ने से चारों ओर हरी हरी घास उगती है। उसे खाकर बेचारे गाय बैल मोटे हो जाते हैं, परन्तु उन दिनों ज़हरीले मच्छड़ उन्हें बहुत सताते हैं।

(२) संसार में धन सब से अच्छी चीज़ मानी गई है परन्तु विद्या उससे कहीं अच्छी होती है।

(३) पत्थर के मकान ईंट के मकानों से ज़्यादा पोढ़े होते हैं, परन्तु उनमें बड़े बड़े आदमी ही रह सकते हैं।

(४) लड़कों की अपेक्षा (या लड़कों से) सयाने अधिक बुद्धिमान् होते हैं।

(५) गोविन्द के पास चार पुस्तकें हैं और वह पाँचवीं लेने वाला है।

(ख) इन वाक्यों में जो जगह छुटी है वहाँ योग्य शब्द लिखो –

(१) सवार लोग.................घोड़ों पर चढ़ कर......
रास्ता...........समय में पार कर जाते हैं।

(२) तुम्हारी छुरी से मेरी छुरी.................है, परन्तु मेरे पास तुम से.................काम रहता है!

(३) ....लड़के जी लगा कर पढ़ते हैं; परन्तु उनसे........ मिहनत लेनी चाहिए।

संबंध—जब एक वस्तु दूसरी से कोई लगाव रखती है अर्थात् उसको पैदा करती है या अपने अधिकार में रखती है या अपना मेल और किसी तरह दिखलाती है तो पहली वस्तु में संबंध कारक होता है। जैसे 'दुर्गा का लड़का,' 'बोधराम की घड़ी', 'तीन मील का रास्ता', इनमें 'दुर्गा', 'बोधराम' और 'मील' शब्द संबन्ध दिखाते हैं। इसी तरह 'मेरी किताब, तुम्हारा घर, उनके हाथी, अपनी चीज़, तुम्हारी भैंस' आदि भी जानो।

हम अव्यय का लक्षण पहले लिख चुके हैं।

क्रियाविशेषण—ऐसा अव्यय है जो क्रिया के अर्थ को बढ़ा कर उसमें कोई विशेष (ख़ास) बात पैदा करता है। जैसे 'काम कर डालो' इस बात में यह नहीं बतलाया कि जल्द करना चाहिए या देर में, इसलिए काम का करना एक साधारण बात है। अगर कहें कि 'काम झटपट कर डालो' तो 'झटपट' शब्द 'कर डालने' के अर्थ को बढ़ा कर उसमें यह ख़ास अर्थ पैदा करता है कि देर में न करना चाहिए बल्कि जल्द ही हो जावे। इसलिये 'झटपट' शब्द 'क्रियाविशेषण' है। इसी तरह 'आज, कल, फिर, सदा, यहाँ, दूर, किधर, केवल, क्यों, नहीं, कुछ, बहुत' आदि जानो।

जिन शब्दों के अंत में 'से, करके, को, में, पर' आदि जोड़ कर क्रिया का विस्तार बनाते हैं वे कई तरह से आते हैं और करण, संप्रदान, अपादान, और अधिकरण कहलाते हैं। इन चारों को और कर्त्ता, कर्म, संबन्ध और संबोधन को आठों कारक कहते हैं। संस्कृत में इन सब के रूप जुदे जुदे होते हैं परन्तु हिन्दी में इन सब के रूप एक ही तरह के होते हैं, केवल 'में, को, से', आदि चिह्न बदलते हैं।

करण—कर्त्ता जिस वस्तु की मदद से या जिसके द्वारा कोई काम करता है उसे करण कहते हैं। जैसे 'उसने अपनी छुरी से मेरी पुस्तक काट डाली', यहाँ पर काटने का काम छुरी से हुआ है। इसलिए छुरी करण है। इसी प्रकार 'लाठी से सांप को मारो', इसमें 'लाठी' करण है।

संप्रदान—कर्त्ता जिसके लिए कुछ काम करता है उसे संप्रदान कहते हैं। जैसे 'वे दर्शन को गये हैं' यहाँ पर दर्शन का अर्थ है दर्शन करने के लिए; इसलिये 'दर्शन' संप्रदान है।

अपादान—जब एक वस्तु दूसरी वस्तु से किसी तरह अलग होती है तो जहाँ से अलग होती है वहाँ 'अपादान' होता है। जैसे 'पेड़ से पत्ती गिरती है' इस वाक्य में पत्ती का लगाव पेड़ से छूटता है, इसलिए पेड़ में अपादान है। 'सोहन अपने भाई से बुद्धिमान् है' इस वाक्य में सोहन की बुद्धि का लगाव उसके भाई की बुद्धि से अलग माना गया है अर्थात् उसके भाई की बुद्धि एक प्रकार की है (कम है), और उसकी बुद्धि दूसरे प्रकार की है (अधिक है), इस लिए 'भाई' अपादान है।

अधिकरण—जिस जगह में या समय में कोई वस्तु रहती है या होती है, उसे अधिकरण कहते हैं। जैसे 'मैं घर में रहता हूँ', 'पुस्तक चौकी पर धरी है', 'वह साँझ को आवेगा', इन वाक्यों में 'घर', 'चौकी', 'साँझ' अधिकरण हैं।

अभ्यास ।

इन वाक्यों में सब कारकों और क्रियाविशेषणों को अलग अलग दिखाओ—

(१) मेरी पुस्तक घर में रक्खी है।
(२) साधू के लिए बाज़ार से खाना लाओ।
(३) वह अपना पैर कुल्हाड़ी से काटता है।
(४) अभी दौड़ कर क़लम लाओ।
(५) मेरी घड़ी कुछ तेज़ चलती है। उसे कल बनवाऊँगा।

(६) स्त्रियाँ चक्की पीसते बहुधा सीताहरण गाती हैं।
(७) नीचे बैठो, नहीं तो ऊपर से गिर पड़ोगे।

अध्याय ६

सर्वनाम और पुरुष।

'दामोदर अच्छा आदमी है पर दामोदर दामोदर के बाप का प्यार नहीं करता' यह बात क्यों बहुत लम्बी और नीरस है? क्योंकि दामोदर का नाम कई बार कहा जाता है। अब अगर कहें कि 'दामोदर अच्छा आदमी है पर वह अपने बाप का प्यार नहीं करता' तो बात अच्छी मालूम होती है, परंतु अर्थ दोनों बातों का एक ही है। पहली बात के दो 'दामोदर' शब्दों को निकाल कर उनकी जगह 'वह' और 'अपने' रख देने से बात छोटी और अच्छी हो गई। इन शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं। इस प्रकार जब कोई संज्ञा दूसरी संज्ञाओं के बदले में कही जाती है तो उसे 'सर्वनाम' कहते हैं।

जब कोई किसी से कुछ बात कहता है या किसी को कुछ लिखता है तो उसमें तीन तरह के लोग होते हैं, अर्थात् (१) कहने या लिखने वाला, (२) जिस से कहता है या जिसको लिखता है, (३) कोई और जिसका नाम बात में या लिखने में आ जावे। अगर कहने या लिखने वाला एक ही है तो वह अपने को 'मैं' कहता है, अगर कई हैं तो वे अपने को 'हम' कहते हैं। परन्तु बोलचाल में बहुधा एक के लिए भी 'हम'

कहते हैं। 'मैं' और 'हम' शब्द किसी के नाम नहीं हैं, किन्तु नाम की जगह कहे जाते हैं, इसलिए 'सर्वनाम' हैं। ये 'उत्तम पुरुष' सर्वनाम कहे जाते हैं।

इसी तरह जिस से बात कहते हैं या जिसको लिखते हैं उसे अगर एक है तो 'तू' कहते हैं और अगर बहुत हैं तो 'तुम' कहते हैं। 'तू' शब्द से निरादर सूचित होता है और जब किसी छोटे आदमी पर क्रोध करते हैं तो उसे 'तू' कह कर पुकारते हैं। इसीलिए तुम शब्द एक के लिए भी लाते हैं। ये शब्द भो सर्वनाम हैं और 'मध्यमपुरुष' सर्वनाम कहे जाते हैं।

बात में या लेख में अगर और किसी का नाम आ जावे तो उसे 'प्रथम पुरुष' या 'अन्य पुरुष' कहते हैं। यह अन्य पुरुष या तो किसी का नाम होगा या नाम की जगह कोई सर्वनाम होगा, जैसे 'वह', 'यह', एक के लिए, 'वे', 'ये', कई के लिए, या आदर के अर्थ एक ही के लिए।

ऊपर के वर्णन से प्रकट है कि 'उत्तम पुरुष' और 'मध्यम पुरुष' केवल सर्वनाम ही में होते हैं, परन्तु 'प्रथम पुरुष' संज्ञा के सब भेदों में होते हैं।

मध्यम पुरुष में अधिक आदर दिखाने के लिए 'तुम' शब्द की जगह 'आप' शब्द लाते हैं। जैसे 'आप आए थे', 'यह आप की घड़ी है' आदि। परन्तु इस शब्द का प्रयोग तीनों पुरुषों में इसलिए लाते हैं कि बार बार 'मैं' और 'तुम' आदि शब्दों के रूप न लाने पड़ें। जैसे 'मैं अपने घर जाता हूँ', 'तुम

अपने घर जाओ,' 'वह अपने घर जावे'। इसका अर्थ यह है कि 'मैं मेरे घर जाता हूँ', 'तुम तुम्हारे घर जाओ', 'वह उसके घर जावे'। परंतु इन वाक्यों में भोड़ापन है, इस लिए 'अपने' शब्द आया, अँगरेज़ी में 'मैं मेरे घर जाता हूँ' आदि प्रयोग होते हैं।

ऊपर के लिखे सब सर्वनाम (१) **पुरुषवाचक** कहलाते हैं। इन के अलावा और भी कई प्रकार के सर्वनाम होते हैं।

(२) **अनिश्चयवाचक**—'कोई' शब्द, जिस के कहने से किसी ख़ास वस्तु का निश्चय नहीं होता। 'किसी से लड़ाई न करो', यहां पर 'किसी' शब्द से ख़ास किसी आदमी का अर्थ नहीं है। 'कोई' शब्द एकवचन है, बहुवचन में 'कोई लोग', 'कोई कोई' आदि कर देते हैं।

(३) **संबंधवाचक**—जो बात एक जगह कही जाती है उसका लगाव दूसरी बात से दिखाने के लिए संबंध-वाचक, 'जो, जौन' शब्द, और लगाव पूरा करने के लिए 'सो, तौन' शब्द आते हैं। जैसे 'जो सोवेगा सो खोवेगा', 'जिस की लाठी तिस की भैंस', यहाँ पर 'जो, सो' का और 'जिस की, तिस की' का आपस में लगाव है।

'सो, तौन' की जगह बहुधा 'वह' शब्द आता है, जैसे 'जो पुस्तक खो गई थी वह मिल गई'।

(४) **प्रश्नवाचक**—जिस से कुछ प्रश्न या पूछना मालूम हो। 'कौन' शब्द; जैसे 'किस ने दवात तोड़ी?' 'कौन मेरे साथ

चलेगा ?' 'क्या' शब्द (निर्जीव वस्तुओं के लिए) जैसे 'क्या खाओगे ?'

जब एक से अधिक के लिए प्रश्न होता है तो बहुधा दो बार सर्वनाम आता है, जैसे 'कौन कौन सोता है' ? 'क्या क्या खाओगे ?'

पास वाली किसी वस्तु के दिखलाने के लिए 'यह' और दूरवाली के लिए 'वह' शब्द आता है। यह दोनों शब्द पुरुष-वाचक सर्वनामों में कहे जा चुके हैं; परन्तु इन को कोई कोई लोग '**निश्चयवाचक**' सर्वनाम कहते हैं। ये शब्द जब किसी दूसरे संज्ञा शब्द के पहले आते हैं तो उस के विशेषण हो जाते हैं; जैसे 'यह आदमी'।

अभ्यास—

इन वाक्यों में जितने सर्वनाम शब्द हों उनका भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन और कारक बतलाओ—

राम—आओ, लक्ष्मण, हम और तुम वन को चलें जिससे पिता की आज्ञा भग न हो; उन की आज्ञा पूरी होगी तो ईश्वर हम सब पर प्रसन्न होगा, और कैकेयी भी जो अपने पुत्र भरत को गद्दी दिलाना चाहती हैं प्रसन्न होंगी।

लक्ष्मण—भाई, ये सब मेरे लिए तृण के समान हैं, आप जो कहिए सो करूँ।

सीता—अपना अपना स्वार्थ सब सोचते हैं, कोई राज्य चाहता है, कोई सुख चाहता है। मैं किस के भरोसे यहाँ रहूँ! मैं भी आप के साथ चलूँगी और अपने नेत्र सफल करूँगी।

राम—लक्ष्मण, ये तो नहीं मानतीं, अच्छा साथ चलने दो।

अध्याय ७

संज्ञा।

यदि नाम ऐसा हो कि उस के कहने से उसी आदमी या जगह या वस्तु का अर्थ निकले, अर्थात् उसके सिवा और किसी का मतलब न हो सके तो ऐसे नाम को 'व्यक्ति-वाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे 'मनोहरलाल' एक आदमी का नाम है, और इस नाम के पुकारने से सिवा उस एक आदमी (व्यक्ति) के और कोई न बोलेगा। इस लिए यह व्यक्ति-वाचक संज्ञा है। इसी प्रकार गंगा, हिमालय, गरुड़, प्रयाग आदि जानो।

यदि उस नाम के कहने से एक ही तरह की बहुत सी वस्तुओं का मतलब हो सके तो उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे 'मनुष्य' शब्द किसी एक ही आदमी का नाम नहीं है, किंतु हर एक आदमी का मतलब इस शब्द से हो सकता है, इस लिए यह जातिवाचक संज्ञा है। इसी प्रकार घोड़ा, मकान, लड़का, खेत, क़लम आदि जानो।

अगर किसी नाम से कोई ऐसा धर्म समझा जावे कि जिस धर्म के होने से कोई दूसरी वस्तु उस नाम से पुकारी जाती है तो उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं; जैसे 'चौड़ाई'। हम कहते हैं कि काग़ज़ या चबूतरा चौड़ा है, क्योंकि काग़ज़ या चबूतरे में एक ऐसा धर्म या स्वभाव अर्थात् चौड़ाई है जिस के होने ही से हम उसे चौड़ा कहते हैं। इस धर्म अर्थात् 'चौड़ाई' को 'भाव-

वाचक संज्ञा' कहते हैं। इसी तरह फैलाव, नमकाहट, चाल आदि जानो।

अगर कोई संज्ञा किसी तरह का भेद बतलाती है अर्थात् यह बतलाती है कि कौन सी चीज़ किस प्रकार की है, भली है या बुरी है, तो उसे 'गुणवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे कहें 'छोटा क़लम' तो यहाँ 'छोटा' शब्द बतलाता है कि वह क़लम और क़लमों की तरह लंबा नहीं है, और इसी लिए उस में और दूसरे क़लमों में भेद है। 'छोटा' शब्द गुणवाचक संज्ञा है, इसी का दूसरा नाम विशेषण है। ऐसे ही ऊँचा, काला, पतला, अच्छा, दूर आदि जानो।

जब कोई संज्ञा दूसरी संज्ञाओं के बदले में कही जाती है तो उसे 'सर्वनाम' कहते हैं। इस का वर्णन पहले हो चुका है।

अभ्यास—

इन वाक्यों में संज्ञा शब्दों के पाँचों भेद अलग अलग दिखाओ—

(१) तुलसीदास ने जो कुछ लिखा है हिंदी ही भाषा में लिखा है; परंतु रामायण आदि उन की पुस्तकों से जान पड़ता है कि वे संस्कृत भी पढ़े थे। वे एक विद्वान् पुरुष थे, परन्तु अपनी पुस्तकों में उन्होंने यही लिखा है कि मैं विद्वान् नहीं, मैं कवि नहीं, मैं गुणवान् नहीं। सच है, विद्वानों की शोभा नम्रता दिखलाने ही में है।

(२) एशिया के उत्तर और पश्चिम में रूस देश है। वहाँ सर्दी बहुत होती है और जाड़े में बहुत मोटी बर्फ़ जम जाती है।

(३) 'तुलसी' जस भवितव्यता, तैसी मिले सहाय।
आपु न आवे ताहि पै, ताहि तहाँ लै जाय॥

अध्याय ८

हम कह चुके हैं कि अव्यय शब्दों का रूप हर एक लिंग और वचन में एक सा बना रहता है। अब यह जानना चाहिए कि लिंग और वचन क्या वस्तु हैं। यहां पर हम केवल संज्ञा के लिंग और वचन बतलावेंगे, क्रिया के लिंग व वचन आगे लिखे जावेंगे।

लिंग ।

लिंग का अर्थ है चिह्न; अर्थात् लिंग से हम जान लेते हैं कि कौन से शब्द का अर्थ पुरुष या नर है और किस का स्त्री या मादा। जैसे 'लड़का' शब्द पुरुष या 'पुँल्लिङ्ग' है और 'लड़की' शब्द 'स्त्रीलिंग' है।

जिन जीवधारियों का जोड़ा (अर्थात् नर और मादा) होता है उनके नामों में पुँल्लिंग और स्त्रीलिङ्ग सहज में जाना जाता है, जैसे 'घोड़ा, घोड़ी' 'बकरा, बकरी' आदि। परन्तु निर्जीव वस्तुओं के नाम में जोड़ा न हो सकने के कारण एक ही लिंग होता है, अर्थात् या तो वे शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं या स्त्रीलिंग, और उनसे दूसरा लिंग बनाने का काम नहीं पड़ता। जैसे घर, जल, बुढ़ापा, पानी पुँल्लिङ्ग हैं, मिठास, चिकनाहट, मेज़, दरी स्त्रीलिंग हैं।

सर्वनामों के दोनों लिंग समान होते हैं और क्रिया से

उन के लिंग का निश्चय होता है; जैसे 'मैं बैठा हूँ' 'मैं बैठी हूँ' पहला 'मैं' पुँल्लिङ्ग है, और दूसरा स्त्रीलिंग।

अब हम कुछ नियम नीचे लिखते हैं।

(१) जोड़े वाले शब्द।

(१) पुँल्लिंग शब्द के अंत वाले अक्षर में अगर 'अ' या 'आ' हो तो उसे 'ई' कर देने से स्त्रीलिंग हो जाता है।
दास—दासी, बकरा—बकरी, लड़का—लड़की।

(२) कभी कभी 'नी' जोड़ने से। सिंह—सिंहनी, ऊँट—ऊँटनी, नट—नटनी, या नटिन।

(३) व्यापार या पेशा करने वालों के नाम में 'इन' जोड़ने से माली—मालिन, लोहार—लोहारिन, तँबोली—तँबोलिन।

(४) आस्पद, पदवी, या उपनाम वाले शब्दों में 'आइन' जोड़ने से। सुकुल—सुकुलाइन, बाबू—बबुआइन, पांड़े—पँड़ाइन। कहीं कहीं के लोग 'आनी' जोड़ते हैं, जैसे मिश्र—मिश्रानी, ठाकुर—ठकुरानी आदि।

(५) कभी कभी दोनों लिंगों में और और शब्द आते हैं।
भाई—बहिन, पुरुष—स्त्री, पिता—माता, बैल—गाय।

(६) बहुत से शब्दों के दोनों लिंगों में थोड़ा थोड़ा सा लगाव रहता है, परन्तु उनके लिए कोई नियम नहीं लिखा जा सकता।
ससुर—सास, भाई—भावज, बछवा या बछड़ा—बछिया।

(२) बिना जोड़े वाले शब्द ।

जोड़े वाले शब्दों के लिए जो चिह्न ऊपर लिख चुके हैं उनके सिवा थोड़े से चिह्न और लिखे जाते हैं—

जिन शब्दों के अंत में 'अ, आ, आव, पा, पन, न, त्व' होते हैं वे बहुधा पुँल्लिंग होते हैं, और जिन के अंत में 'आई, ता, वट, हट, ति, नि' होते हैं वे बहुधा स्त्रीलिंग होते हैं। जैसे पुँल्लिंग—तनाव, चढ़ाव, बुढ़ापा, रँड़ापा, बचपन, लड़कपन, गमन, मान, पुरुषत्व, गुरुत्व आदि ।

स्त्रीलिंग—अच्छाई, सगाई, निठुरता, कठिनता, थकावट, बनावट, चिल्लाहट, चिकनाहट, गति, मति, चलनि, बोलनि आदि ।

कभी कभी कोई नियम नहीं काम आता, केवल बातचीत ही से लिंग जाना जा सकता है ।

पुँल्लिंग—पानी, दही, हँसिया, नींबू आदि ।

स्त्रीलिंग—चाल, ढाल, दवात, पुस्तक आदि ।

विशेषण का वही लिंग होता है जो उसके विशेष्य का ।

अगर पुँल्लिंग विशेषण के अंत में 'आ' हो तो स्त्रीलिंग में उसे 'ई' कर देते हैं; जैसे 'ऊँचा पेड़', 'ऊँची छत', 'लंबा रस्सा', 'लंबी रस्सी' आदि । अगर पुँल्लिंग विशेषण में 'आ' के सिवा और कोई स्वर हो तो बहुधा स्त्रीलिंग में भी वही रूप रहता है । इनका प्रयोग बातचीत से जानना चाहिए ।

जिन शब्दों के लिङ्ग में कुछ संदेह हो उनको अन्य वाक्यों

में रख कर पक्का कर लो । जैसे 'क़लम' शब्द में संदेह हो तो देखो कि 'मेरा क़लम मुझे दो' कहेंगे या 'मेरी क़लम मुझे दो' कहेंगे, जिस वाक्य में अच्छा लगे उसी के अनुसार लिंग बतलाओ । यहाँ पर प्रथम वाक्य का सुनना अच्छा लगता है, इसलिए 'क़लम' शब्द पुँल्लिंग है ।

अभ्यास—

इन वाक्यों में संज्ञा शब्दों के लिंग बताओ, जिस शब्द का दूसरा लिंग हो सकता है वह भी बतलाओ और कठिन शब्दों को अन्य वाक्यों में रक्खो ।

(१) मैं घर जाते समय अपनी लड़की के लिए बाज़ार से एक अठन्नी के खिलौने मोल लेकर पुस्तक पढ़ता हुआ सड़क सड़क आया । रास्ते में पानी बरसने से खिलौनों का रंग फीका पड़ गया, इससे जी में बड़ी चिंता हुई । पर सोचा कि दुर्गाजी के मेले में फिर ले लेंगे ।

(२) नदी के उतार पर एक नाग पड़ा था, उसे डर दिखा कर गोसाईंजी ने भगाया । पर मेरे मन में इतनी चपलता थी कि आहट पाते ही अपनी राह लेता, क्योंकि मैं इसी में अपनी भलाई देखता था ।

वचन ।

वचन से संख्या या गिनती जानी जाती है अर्थात् यह जाना जाता है कि एक वस्तु से प्रयोजन (मतलब) है या अधिक से । हिन्दी में दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन । जब कि एक ही वस्तु से मतलब होता है तो उसे एकवचन कहते हैं और जब दो, तीन, या अधिक से होता है तो उसे बहुवचन कहते हैं । जैसे 'लड़का पोथी पढ़ता है' इसमें केवल एक लड़के का मतलब है, इसलिए 'लड़का' शब्द एकवचन है । 'लड़के पोथी

पढ़ते हैं', इसमें बहुत से लड़कों का मतलब है, इसलिए 'लड़के' शब्द बहुवचन है। इसी प्रकार 'पढ़ता है' एकवचन और 'पढ़ते हैं' बहुवचन है।

संज्ञा और क्रिया के एकवचन व बहुवचन वाले रूप आगे दिखाए जावेंगे, परन्तु यहाँ इतना कहना आवश्यक है कि किसी किसी स्थान में दोनों वचन एक ही प्रकार के होते हैं और उनका भेद केवल अर्थ से जाना जाता है। ऐसे स्थानों में बहुधा कुछ शब्द ऐसे लगा दिए जाते हैं जिन से बहुत वस्तुओं का ज्ञान हो। जैसे 'इस देश का राजा बैठा है' 'इस देश के राजा वा राजा लोग बैठे हैं'। यहाँ प्रथम वाक्य में 'का' द्वितीय में 'के' प्रथम में 'बैठा है' द्वितीय में 'बैठे हैं' इन शब्दों से एक-बचन और बहुवचन का निश्चय होजाता है, द्वितीय वाक्य में 'लोग' शब्द दिखलाता है कि कई राजा हैं।

जब विशेषण के अंत में 'अ' होता है और उसका विशेष्य पुँल्लिंग होता है तो सब कारकों व वचनों में 'अ' की जगह 'ए' कर देते हैं जैसे 'अच्छे बालक ने', 'मीठे फलों से' 'ऊँचे पेड़ पर' आदि। परन्तु जब एकवचन कर्त्ता वा कर्म में चिह्न 'ने' और 'को' नहीं आते तो 'अ' की जगह 'ए' नहीं करते; जैसे 'अच्छा बालक बैठा है' 'मीठा फल खाता हूँ' आदि।

अभ्यास—

इन वाक्यों में संज्ञा शब्दों के एकवचन और बहुवचन बताओ और

जहाँ तक हो सके एकवचन शब्दों के बहुवचन और बहुवचन शब्दों के एकवचन बनाओ—

(१) दंडक वन में बड़े बड़े महात्मा मुनि रहते थे। अगस्त्यजी की कुटी भी यहीं थी। परंतु सबको शंका रहती थी कि राक्षस लोग छापा न मारें।

(२) वर्षा में पानी बरसने से कीड़े पतंगे बहुत हो जाते हैं। इन दिनों कोई कोई लोग रात को भोजन नहीं करते।

(३) आम खाओगे या अमरूद?

रूप-साधन।

कर्त्ता से लेकर संबोधन तक सब कारकों के एकवचन में एक ही तरह का रूप होता है और बहुवचन में दूसरी तरह का। इन रूपों के अंत में ने (कर्त्ता), को (कर्म), से, करके (करण), के लिए (संप्रदान), से (अपादान), का, की, के (संबन्ध), में, पर (अधिकरण), और आदि में हे, अरे (संबोधन) जोड़ने से आठों कारक बन जाते हैं। परन्तु बहुवचन संबोधन में अनुस्वार अर्थात् अक्षर के ऊपर की बिंदी नहीं लगाते। जब कर्त्ता का चिह्न 'ने' और कर्म का चिह्न 'को' नहीं आता तो रूप दूसरी तरह के हो जाते हैं। ये रूप अलग दिखाए जावेंगे।

नीचे के चक्र में अकारांत से ओकारांत तक जातिवाचक संज्ञाशब्द और कुछ सर्वनाम शब्द लिखे गए हैं। सर्वनाम शब्दों में संबोधन नहीं होता, इस लिए नहीं लिखा गया।

नोट—संज्ञा और क्रिया के बहुवचनों में 'ओं' व 'ए' की जगह 'वों' व 'ये' भी लिखा जाता है; जैसे माताओं या मातावों, गए या गये आदि। पर इस पुस्तक में ऐसे प्रयोग नहीं लाए गए।

शब्द	'ने', 'को', 'से', 'का', 'में', 'पर', 'हे', आदि जोड़ने से कर्त्ता, कर्म, करण आदि कारक		कर्त्ता और कर्म, जब 'ने', 'को', नहीं आते		संबोधन
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	बहुवचन
फल पुंल्लिंग	फल ने, को आदि	फलों ने, को आदि	फल	फल	फलो
बहन स्त्री०	बहन ने ,, ,,	बहनों ने ,, ,,	बहन	बहनें	बहनो
घोड़ा पुं०	घोड़े ने ,, ,,	घोड़ों ने ,, ,,	घोड़ा	घोड़े	घोड़ो
राजा पुं०	राजा ने ,, ,,	राजाओं ने ,, ,,	राजा	राजा	राजाओ
माता स्त्री०	माता ने ,, ,,	माताओं ने ,, ,,	माता	माताएं	माताओ
खटिया स्त्री०	खटिया ने ,, ,,	खटियों ने ,, ,,	खटिया	खटियाँ	खटियो
ऋषि पुं०	ऋषि ने ,, ,,	ऋषियों ने ,, ,,	ऋषि	ऋषि	ऋषियो
बुद्धि स्त्री०	बुद्धि ने ,, ,,	बुद्धियों ने ,, ,,	बुद्धि	बुद्धियाँ	बुद्धियो
धोबी पुं०	धोबी ने ,, ,,	धोबियों ने ,, ,,	धोबी	धोबी	धोबियो
दासी स्त्री०	दासी ने ,, ,,	दासियों ने ,, ,,	दासी	दासियाँ	दासियो
साधु पुं०	साधु ने ,, ,,	साधुओं ने ,, ,,	साधु	साधु	साधुओ
धेनु स्त्री०	धेनु ने ,, ,,	धेनुओं ने ,, ,,	धेनु	धेनु	धेनुओ
भालू पुं०	भालू ने ,, ,,	भालुओं ने ,, ,,	भालू	भालू	भालुओ
बालू स्त्री०	बालू ने ,, ,,	बालुओं ने ,, ,,	बालू	बालू	बालुओ
दुबे पुं०	दुबे ने ,, ,,	दुबेओं / दुबों } ने ,, ,,	दुबे	दुबे	दुबेओ / दुबो }
सरसों पुं०स्त्री०	सरसों ने ,, ,,	सरसोंओं ने ,, ,,	सरसों	सरसों	सरसोंओ

सर्वनाम।

यह, वह, कौन, जौन, तौन शब्दों के रूप एक ही प्रकार बनते हैं।

एकवचन

कर्त्ता—यह, वह, आदि; इस ने, उस ने, किस ने, जिसने, तिसने।
कर्म—इसको, इसे, उसको, उसे, आदि।
करण—इससे, उस से, आदि।
संप्रदान—इसके लिए, उसके लिए, आदि।
अपादान—इससे, उससे, आदि।
संबंध—इसका–की–के, उसका, आदि।
अधिकरण—इस में–पर, उस में, आदि।

बहुवचन

कर्त्ता—ये, वे, कौन आदि, इन ने, उनने, किनने, जिन ने, तिनने; इन्हों ने, उन्हों ने, किन्हों ने, जिन्हों ने, तिन्हों ने।
कर्म—इन को, इन्हें, उन को, उन्हें आदि।
करण—इनसे, उनसे, आदि।
संप्रदान—इनके लिए, उनके लिए, आदि।
अपादान—इन से, उन से, आदि।
संबंध—इन का–की–के, उनका, आदि।
अधिकरण—इन में–पर, उन में, आदि।

तू और मैं शब्द (दोनों लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
क०	तू, मैं, तू ने, मैं ने,	तुम, हम; तुम ने, हम ने ।
कर्म	तुझको, मुझको; तुझे, मुझे;	तुमको, हम को, तुम्हें, हमें ।
करण	तुझ से, मुझ से	तुम से, हमसे ।
संप्र०	तुझको, मुझको; तुझे, मुझे;	तुम को, हम को; तुम्हें, हमें ।
	तेरे लिए, मेरे लिए	तुम्हारे लिए, हमारे लिए ।
अपा०	तुझ से, मुझ से;	तुम से, हमसे ।
संबंध	तेरा, मेरा; तेरी, मेरी;	तुम्हारा, हमारा; तुम्हारी, हमारी;
	तेरे, मेरे	तुम्हारे, हमारे ।
अधि०	तुझ में—पर, मुझ में—पर,	तुममें—पर, हम में—पर ।

नोट—कभी कभी तेरे को, मेरे से, तुम्हारे में, हमारे पर आदि रूप भी आते हैं ।

'क्या' शब्द (एकवचन)

कर्त्ता और कर्म में—क्या ।

और कारकों में—काहे से, किस से, काहे में, किस में आदि ।

अपना (दोनों वचनों में)

कर्त्ता—आप ।

संबंध—अपना—अपनी—अपने ।

और कारक—अपने को, से, लिए, में आदि ।

विशेषण।

विशेष्य के जो लिंग, वचन, और कारक होते हैं वही विशेषण के भी होते हैं, परंतु जब विशेषण अपने विशेष्य के साथ रहता है तब उसमें कारकों व वचनों के चिह्न नहीं आते, केवल विशेष्य ही में आते हैं; जैसे 'हरियाँ पत्तियाँ हिलती हैं', अशुद्ध है, 'हरी पत्तियाँ हिलती हैं' शुद्ध है। जब विशेषण अकेला ही आता है तब उस में कारकों व वचनों के चिह्न लगाते हैं, जैसे 'प्यासों को पानी पिलाना चाहिए'।

अध्याय ६

दो बातें लो, 'देवदत्त सोता है' और 'देवदत्त चिट्ठी लिखता है'. और देखो कि दूसरी बात पहली से क्यों बड़ी है और दोनों बातों की क्रियाओं में क्या भेद है। पहली बात में कर्त्ता (देवदत्त) और क्रिया (सोता है) से अर्थ पूरा हो जाता है, अर्थात् सुनने वाले को यह पूछने का काम नहीं रह जाता कि 'क्या सोता है ?' और सोने का काम देवदत्त ही पर समाप्त हो जाता है। दूसरी बात में अगर हम इतना ही कहें कि 'देवदत्त लिखता है', तो सुनने वाले का अर्थ पूरा न होगा और वह पूछेगा 'क्या लिखता है ?' इसके उत्तर में हम कहेंगे कि 'चिट्ठी लिखता है' अर्थात् लिखने का काम देवदत्त ही पर समाप्त नहीं हो जाता, बल्कि 'चिट्ठी' शब्द के लाने की ज़रूरत रखता है। इस शब्द को हम 'कर्म' कहते हैं। पहली बात में

कोई कर्म नहीं है इस लिए उस बात की क्रिया 'सोता है' यह 'अकर्मक' अर्थात् बिना कर्म वाली है। दूसरी बात में कर्म है, इस लिए उसकी क्रिया 'लिखता है' 'सकर्मक' अर्थात् कर्मवाली है। इस तरह पर क्रिया के दो भेद होते हैं—अकर्मक और सकर्मक।

'गुरु ने बालक को विद्या पढ़ाई' इस बात में अगर इतना ही कहें कि 'गुरु ने पढ़ाई' तो सुनने वाला दो प्रश्न कर सकता है, (१) क्या पढ़ाई ? विद्या, (२) किसको पढ़ाई ? बालक को। पढ़ाने की क्रिया का फल पहले तो 'विद्या' पर गिरता है और फिर 'बालक' पर, इस लिए दोनों कर्म हैं और इस बात की क्रिया 'पढ़ाना' द्विकर्मक क्रिया है। 'लिखना' केवल 'एककर्मक' क्रिया है।

द्विकर्मक क्रियाओं में एक 'प्रधान' कर्म होता है और दूसरा 'अप्रधान' या 'गौण'। प्रधान कर्म वह है जो वाच्यपरिवर्तन में अपना रूप कर्त्ता का सा कर लेता है। जैसे अगर ऊपर की बात का परिवर्तन करें तो होगा 'गुरु से बालक को विद्या पढ़ाई गई'। यहाँ पर 'विद्या' शब्द का रूप कर्त्ता का साहै, इस लिए ऊपर की बात में 'विद्या' 'प्रधान कर्म' है और 'बालक' 'अप्रधान कर्म'। वाच्यपरिवर्तन के बारे में आगे लिखा जावेगा।

अभ्यास—

अपनी ओर से अकर्मक, सकर्मक (एककर्मक और द्विकर्मक) क्रियाओं

के उदाहरण वाक्यों में दो और नीचे की बातों में उन को अलग अलग करके दिखलाओ—

(१) मैं पुस्तक पढ़ते पढ़ते थक गया हूँ, पर बिना तोते को पानी पिलाए नहीं लेटूँगा। (२) वह अपने बाप से डरता तो है, पर गायें चराने नहीं जाता। (३) तुमको क्या सूझी है कि मुझे एक बीड़ा पान भी नहीं खिलाते हो। (४) रामदयालु को अपने मरने जीने की चिंता नहीं, कभी बीच राह में सो जाता है, कभी सोते हुए जीवों को जगा देता है, कभी दो दो घंटे तक दौड़ कर इकबारगी पानी पीलेता है। (५) सीतल अपने भाई को अँगरेज़ी पढ़ाते हैं, पर उसे कुछ आता नहीं है। (६) वह पेड़ पर से कई बार गिरा, पर उसके सीधे घोड़े ने उसे एक बार भी न गिराया।

अध्याय १०

क्रिया।

हम कह चुके हैं कि क्रिया वह शब्द है जिस से किसी काम का करना या होना पाया जावे। अब देखना चाहिए कि वह काम किसी काल अर्थात् समय पर होगा, उसका करने वाला पहले कहे हुए तीन पुरुषों में से कोई होगा, एक करने वाला होगा या बहुत से होंगे, स्त्री करेगी या पुरुष करेगा, इत्यादि। इन सब बातों के भेद से क्रिया के रूपों में भेद हो जाता है। इनका वर्णन एक एक करके नीचे लिखा जाता है।

काल।

जिस समय कोई बात कही जाती है उस समय से क्रिया के काल का हिसाब लगाया जाता है। जैसे कहें कि 'विष्णुदत्त

पढ़ता है' तो यहाँ पर जिस समय यह बात कही जाती है उस समय विष्णुदत्त के पढ़ने का प्रारंभ हो चुका है, परंतु अभी पढ़ने का काम समाप्त नहीं हुआ। ऐसे काल को 'वर्तमानकाल' कहते हैं और 'पढ़ता है' यह 'वर्त्तमान कालिक क्रिया' है।

अब अगर कहें कि 'विष्णुदत्त पढ़ चुका है, या पढ़ता था, या उसने पढ़ा था' तो मालूम होता है कि इस बात के कहने के समय विष्णुदत्त के पढ़ने का प्रारंभ भी हो चुका और पढ़ने का काम पूरा भी हो गया, अर्थात् जिस समय यह बात कही गई उस समय वह नहीं पढ़ता, किंतु उसके पहले ही पढ़ने का काम पूरा कर चुका। ऐसे काल को 'भूत काल' कहते हैं, और 'पढ़ा था' आदि क्रियाओं को 'भूत कालिक क्रिया' कहते हैं।

'विष्णुदत्त पढ़ेगा' इस वाक्य में पढ़ने का अभी तक आरंभ नहीं किया गया, किंतु आगे अर्थात् आने वाले समय में किया जावेगा। ऐसे काल को 'भविष्यत् काल' कहते हैं और 'पढ़ेगा' इस क्रिया को 'भविष्यत् कालिक क्रिया' कहते हैं।

वर्त्तमान कालिक क्रिया के दो उदाहरण लो (१) 'विष्णुदत्त पढ़ता है', (२) 'विष्णुदत्त पढ़ता होगा'। पहली बात में तो कहने वाला जानता है कि विष्णुदत्त पढ़ता है, इस लिए वह '**सामान्य** वर्तमानकालिक क्रिया' है, परन्तु दूसरी बात को वह जानता नहीं, किंतु उसमें संदेह है, इस लिए यह '**सन्दिग्ध** वर्त्तमानकालिक क्रिया' है।

इसी तरह भूतकालिक क्रिया के कई उदाहरण लो—

(१) विष्णुदत्त ने पढ़ा—इसमें भूत काल की कोई विशेषता नहीं, इस लिए यह 'सामान्य भूत काल' है ।

(२) विष्णुदत्त ने पढ़ा है—वर्त्तमानकाल के समीप ही पढ़ा, इस लिए यह 'आसन्न भूत काल' है ।

(३) विष्णुदत्त ने पढ़ा था—वर्त्तमानकाल से दूर समय में 'पढ़ा' इस लिए यह 'पूर्ण भूत काल' है ।

(४) विष्णुदत्त ने पढ़ा होगा—संदेह है, इस लिए यह 'संदिग्ध भूत काल' है ।

(५) विष्णुदत्त पुस्तक पाता तो पढ़ता—इसमें 'पुस्तक पाना' कारण है, इसी कारण से पढ़ने का कार्य पूरा हो सकता था । यह 'हेतुहेतुमद् भूत काल' है ।

(६) विष्णुदत्त पढ़ता था—यहां पर काम के पूरे होने का कोई पता नहीं, इस लिए यह 'अपूर्ण भूत' है ।

इन कालों के सिवा क्रियाओं के कुछ और भी रूप होते हैं—(१) **विधि** जिस में किसी को कुछ काम करने की आज्ञा दी जावे, जैसे 'कुर्सी पर बैठो', 'लड़के पढ़ें' । (२) **संभावना**, जिस में क्रिया के होने का निश्चय न हो, किंतु संभव मात्र हो, जैसे 'वह पत्र लिखे तो मैं उसे भरती करलूँ', इसमें 'लिखे' संभावना है ।

पुरुष ।

क्रिया का करने वाला या कर्त्ता उत्तम, मध्यम और अन्य

पुरुषों में से जो पुरुष होगा उसी पुरुष के अनुसार क्रिया का रूप भी होगा । इसी लिए पदव्याख्या करने में क्रिया का पुरुष भी दिखलाना पड़ेगा । जैसे 'मैं जाता हूँ' (उत्तम पुरुष), 'तू खावेगी' (मध्यम पुरुष), 'वे सोवेंगे' (अन्य पुरुष) । क्रियाओं के रूप आगे दिये जावेंगे ।

वचन ।

संज्ञा की तरह क्रिया में भी वचन होता है, अर्थात् जो वचन कर्त्ता का होता है वही क्रिया का भी होता है, जैसे 'मैं गया' (एकवचन), 'हम गए' (बहुवचन), शब्द व्याख्या में क्रियाओं का वचन बतलाना चाहिए ।

लिंग ।

कर्त्ता के लिंग के समान क्रिया का भी लिंग होता है । जैसे 'लड़का पढ़ता है', 'लड़की पढ़ती है' । इनके रूप आगे दिए जावेंगे ।

परंतु भूत काल में जब कर्त्ता के साथ 'ने' आता है और कर्म के साथ 'को' नहीं आता तो क्रिया का लिंग और वचन कर्म के हिसाब से होता है । जैसे 'उस ने, या उन्हों ने' या राम ने, या सीता ने एक पुस्तक पढ़ी, 'उसने, या उन्हों ने चार पुस्तकें पढ़ीं, और दो पत्र लिखे' । जब कर्म में 'को' लगा देते हैं तो क्रिया का रूप कर्म के समान नहीं होता । जैसे उन्हों ने एक पुस्तक को पढ़ा ।

उत्तम, मध्यम और प्रथम पुरुषों में; एकवचन व बहुवचन में; पुँल्लिंग व स्त्रीलिंग में; वर्त्तमान, भूत और भविष्यत् कालों के सब भेदों में; कर्त्तृवाच्य और कर्मवाच्य में मिलाकर क्रियाओं के बहुत से रूप होते हैं। ख़ास ख़ास रूप यहाँ दिए जाते हैं।

क्रियाओं के रूप ।

सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतों में अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं के रूप जुदी जुदी तरह के होते हैं, परन्तु और रूप एक ही तरह के होते हैं।

अकर्मक 'उठना' व सकर्मक 'पढ़ना'

(क) एक ही प्रकार के रूप ।

वर्त्तमानकाल ।

	एकवचन (पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग)	बहुवचन (पुं०, स्त्रीलिंग)
उत्तम पुरुष	मैं उठता हूँ—उठती हूँ	हम उठते हैं—उठती हैं
मध्यम पुरुष	तू उठता है—उठती है	तुम उठते हो—उठती हो
अन्यपुरुष	वह " "—" "	वे उठते हैं—उठती हैं

हेतुहेतुमद्भूत ।

उ०, म०, अ०, मैं, तू, वह उठता—उठती। हम, तुम, वे उठते—उठतीं

अपूर्णभूत

उ० म० अ० मैं, तू, वह उठता था—हम, तुम, वे, उठते थे
उठती थी उठती थीं

भविष्यत् काल।

उ०	मैं उठूँगा—उठूँगी	हम उठेंगे—उठेंगी
म०	तू उठेगा—उठेगी	तुम उठोगे—उठोगी
अ०	वह "—"	वे उठेंगे—उठेंगी

विधि (पुँ० स्त्री० समान)

उ०	मैं उठूँ	हम उठें
म०	तू उठ	तुम उठो, आप उठिए
अ०	वह उठे	वे उठें

संभावना (पुँ० स्त्री० समान)

मध्यम पुरुष एकवचन तू उठे। और रूप विधि की तरह।

(ख) और और तरह के रूप।

अकर्मक 'उठना'

सामान्यभूत।

	ए० व० (पुँ० स्त्री०)	ब० व० (पुँ० स्त्री०)
उ० म० अ०	मैं, तू, वह उठा—उठी	हम, तुम, वे उठे—उठीं

आसन्नभूत।

उ०	मैं उठा हूँ—उठी हूँ	हम उठे हैं—उठी हैं
म०	तू उठा है—उठी है	तुम उठे हो—उठी हो
अ०	वह ,,—,,	वे उठे हैं—उठी हैं

पूर्णभूत ।

उ० म० अ० मैं, तू, वह उठा था—हम, तुम, वे उठे थे
उठी थी उठी थीं

संदिग्धभूत ।

उ०	मैं उठा हूँगा—उठी हूँगी	हम उठे होंगे—उठी होंगी।
म०	तू उठा होगा—उठी होगी	तुम उठे होगे—उठी होंगी
अ०	वह,, ,,—,, ,,	वे उठे होंगे—उठी होंगी

नोट—सकर्मक 'भूलना, लाना, बोलना,' के रूप अकर्मक क्रियाओं की तरह होते हैं। इन के कर्त्ता में चिह्न 'ने' नहीं आता और कर्म का चिह्न 'को' भी इनके साथ भद्दा लगता है। 'खाना, पीना, पहनना,' आदि क्रियाओं में भी 'को' अच्छा नहीं लगता। 'समझना क्रिया में चिह्न 'ने' कभी लाते हैं, कभी नहीं लाते।

सकर्मक 'पढ़ना'

जब कर्मकारक का चिह्न 'को' नहीं आता तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूतों में सकर्मक क्रियाओं के रूप कर्म के अनुसार पुँल्लिंग, स्त्रीलिंग, तथा एकवचन व बहुवचन होते हैं। परन्तु जब 'को' आता है तो क्रिया का रूप सदा पुँल्लिंग एकवचन का सा रहता है।

कर्म का चिह्न 'को' न आने पर

मैं ने, हम ने, तू ने, तुम ने, उस ने, उन्हों ने

	कर्म एकवचन (पुँ० स्त्री०)	कर्म बहुवचन (पुँ० स्त्री०)
सामान्यभूत	पढ़ा—पढ़ी	पढ़े—पढ़ीं
आसन्नभूत	पढ़ा है—पढ़ी है	पढ़े हैं—पढ़ी हैं
पूर्णभूत	पढ़ा था—पढ़ी थी	पढ़े थे—पढ़ी थीं
संदिग्धभूत	पढ़ा होगा—पढ़ी होगी	पढ़े होंगे—पढ़ी होंगी

अध्याय ११

क्रिया ।

कर्त्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य ।

जब कि क्रिया के लिंग वचन कर्त्ता के अनुसार हों तो उसे 'कर्त्तृवाच्य' या 'कर्त्तृप्रधान' क्रिया कहते हैं; जैसे 'बलदेव पानी पीता है'। परन्तु जब कर्त्ता प्रकट न हो और कर्म ही कर्त्ता के से रूप से आवे तो उसे 'कर्मवाच्य' या 'कर्मप्रधान' क्रिया कहते हैं; जैसे 'पानी पिया जाता है'। यहाँ पर पानी कर्म है पर कर्त्ता की तरह आया है। अगर कर्त्ता को प्रकट करना हो तो उसे 'करण कारक' में रखते हैं; जैसे 'बलदेव से पानी पिया जाता है'।

अकर्मक क्रियाओं में भी इसी तरह करते हैं, अर्थात् कर्त्ता में 'से' लगाकर क्रिया में 'जाना' शब्द के रूप लगाते हैं; जैसे 'मुझ से नहीं सोया जाता'। परन्तु इन क्रियाओं में कर्म के न होने से 'कर्मवाच्य' नहीं होता; इस लिए इन को 'भाववाच्य' कहते हैं।

पहले हम 'वाच्यपरिवर्त्तन' का नाम लिख चुके हैं। इस का यह अर्थ है कि 'कर्तृवाच्य' को 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' बनावें और 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' को 'कर्तृवाच्य' बनावें।

चेत रखना चाहिए कि द्विकर्मक क्रियाओं के वाच्यपरिवर्त्तन में प्रधान कर्म का रूप कर्त्ता का सा हो जाता है और अप्रधान का रूप नहीं बदलता। जैसे 'गुरु ने बालक को विद्या पढ़ाई' इस में 'विद्या' प्रधान कर्म है, इस लिए वाच्यपरिवर्त्तन में 'गुरु से बालक को विद्या पढ़ाई गई' यह रूप हुआ। 'गड़रियों ने भेड़ें गाँव को खदेरीं' इसका परिवर्त्तन हुआ 'गड़रियों से भेड़ें गाँव को खदेरी गईं'।

कभी कभी इस तरह का भी रूप हो जाता है, जैसे 'गुरु से बालक विद्या पढ़ाया गया,' पर ऐसे रूप बहुत ही कम आते हैं।

कर्मवाच्य के सब रूप अकर्मक क्रिया के होते हैं। मुख्य क्रिया के सामान्य भूत वाले रूपों में 'जाना' क्रिया के रूप जिस काल, लिंग, वचन में चाहो लगा दो। जैसे 'मैं देखा जाता हूँ, तुम सताई जाती हो, वे मारे जाते हैं, फल खाया गया, घंटा बजाया गया, रुपया दिया जावेगा' आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रेरणार्थक क्रिया वह होती है जिस में कोई कर्त्ता किसी दूसरे से कोई काम कराता है। इस दशा में अकर्मक क्रिया

सकर्मक हो जाती है और जिस के द्वारा वह कर्म कराया जाता है वह 'कर्म' हो जाता है। जैसे 'मोहन दौड़ता है' इस में 'दौड़ना' अकर्मक क्रिया है; पर अगर मोहन दौड़ने का काम स्वयं नहीं करता किन्तु सोहन से कराता है तो कहेंगे कि 'मोहन सोहन को दौड़ाता है'। यहाँ पर 'सोहन' कर्म है और 'दौड़ाना' सकर्मक क्रिया है।

इसी प्रकार अगर कोई कर्ता किसी सकर्मक क्रिया को किसी दूसरे से कराता है तो वह क्रिया कभी द्विकर्मक हो जाती है और कभी प्रेरणार्थक। जैसे 'रामसिंह दूध पीता है' इससे द्विकर्मक क्रिया यह बनी, 'रामसिंह अपने लड़के को दूध पिलाता है'। 'बढ़ई वृक्ष काटता है' इससे प्रेरणार्थक क्रिया यह बनी 'बढ़ई मज़दूर से वृक्ष कटाता है' इस उदाहरण में 'मज़दूर' शब्द भी एक प्रकार का कर्त्ता है, क्योंकि वृक्ष काटने का काम वही करता है; ऐसे कर्त्ता को 'प्रयोज्य' कर्त्ता कह सकते हैं और 'बढ़ई' को 'प्रयोजक' कर्त्ता।

ऐसी क्रियाओं के बनाने का कोई एक नियम बँधा नहीं है, परन्तु बहुधा पहले अक्षर के स्वर का गुण हो जाता है, अर्थात् अ आ, इ ई, उ ऊ, की जगह आ, ए, ओ, हो जाता है, जैसे 'कटना-काटना, बिकना—बेचना, खुलना—खोलना' आदि। कभी कभी दूसरे अक्षर में 'आ' जोड़कर पहिले अक्षर को ह्रस्व कर देते हैं; जैसे 'जागना—जगाना, घूमना—घुमाना' आदि। प्रेरणार्थक में 'ना' के पहिले 'वा' जोड़ देते हैं; जैसे 'कटवाना,

खुलवाना, जगवाना' आदि। इसमें भी पहला अक्षर ह्रस्व हो जाता है। बहुत से अक्षर बदल जाया करते हैं; जैसे 'छुटना—छोड़ना, बिकना—बेचना' आदि।

थोड़े से उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं—

उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
भीगना	भिगोना, भिगाना	भिगवाना
डूबना	डुबोना, डुबाना	डुबवाना
देना	दिलाना	दिलवाना
लेना	लिवाना	लिवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
मरना	मारना	मरवाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
फुटना	फोड़ना	फुड़वाना
रहना	रखना	रखवाना

नोट १—आना, जाना, होना आदि कुछ क्रियाओं को छोड़ कर सब क्रियाओं के इस प्रकार के रूप बन सकते हैं।

नोट २—सब क्रियाओं के उस मूल रूप को जिस में 'ना' लगा होता है 'धातु' कहते हैं।

संयुक्त क्रिया।

जब दो या कभी कभी तीन क्रियाएँ मिलकर आती हैं तब मुख्य क्रिया के अर्थ में थोड़ी सी विशेषता हो जाती है।

अर्थात् उसका अर्थ एक ख़ास तरह का हो जाता है। ऐसी क्रियाओं को संयुक्त क्रिया अर्थात् मिली हुई क्रिया कहते हैं।

कभी मुख्य क्रिया की धातु में, कभी उससे 'ना' निकाल कर, कभी 'ना' को 'ने' से बदल कर और कभी सामान्य भूत, या हेतुहेतुमद्भूत के रूपों में दूसरी क्रिया जोड़ देने से संयुक्त क्रिया बन जाती है। जैसे पढ़ सकना (शक्ति-बोधक); कर चुकना, लिख डालना, पढ़ जाना, (समाप्ति-बोधक); देखा करना, देखते रहना (नित्यता-बोधक); बोला चाहना, पढ़ा चाहना (इच्छा-बोधक); बरसने लगना (आरम्भ-बोधक); दौड़ने देना, बैठने पाना, (आज्ञा-बोधक) आदि।

तीन क्रियाओं का संयोग, जैसे 'बैठा रहने देना,' 'चले जाने पाना' आदि।

जब 'सकना, चुकना, जाना, रहना, लगना, पाना' को जोड़कर संयुक्त क्रियाएं बनती हैं तो सकर्मक क्रियाओं में भी कर्त्ता का चिह्न 'ने' नहीं आता; जैसे 'मैं पढ़ सका, या चुका, या गया' 'मैं पढ़ने लगा,' 'मैं पढ़ता रहा,' 'मैं पढ़ने नहीं पाया' आदि।

पूर्वकालिक क्रिया।

जब कोई कर्त्ता एक क्रिया के समाप्त हो जाने पर दूसरी क्रिया करता है तो पहली क्रिया को 'पूर्वकालिक क्रिया' कहते हैं, जैसे 'चिट्ठी लिख' या 'लिख कर, या लिख के, या लिख कर के घर को जाओ'। यहां पर 'लिखना' पूर्वकालिक क्रिया है।

क्रु
३२८

अव्यय की तरह इसमें भी लिंग, वचन और पुरुष में भेद नहीं होता, और जो काल दूसरी क्रिया का होता है वही इस का भी होता है ।

नाम धातु ।

कुछ क्रियाएँ ऐसी होती हैं जो यथार्थ में क्रियाएँ नहीं हैं, किन्तु संज्ञा शब्दों में 'ना' जोड़ कर और कुछ अदल बदल कर के बन जाती हैं। जैसे 'अपना' से 'अपनाना,' 'फंदा' से 'फंदियाना,' 'झन्झन्' शब्द से 'झंझनाना,' 'खटखट' शब्द से 'खटखटाना' आदि । इन धातुओं को 'नाम धातु' कहते हैं । ग्राम्य भाषा अर्थात् गाँव वाली बोली में इन का प्रयोग बहुत होता है ।

अभ्यास—

इन वाक्यों में कुल क्रियाओं की व्याख्या करो, अर्थात् अकर्मक सकर्मक-भेद, काल, पुरुष, लिंग, वचन, वाच्य भेद, कर्त्ता आदि बताओ—

(१) हरी—कहो, भाई, आज क्या जलसा हो रहा है ?

केशव—आज महाराज जार्ज के जन्म का दिन है । इसी से स्त्रियाँ गीत गाती हैं और पुरुष ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि महाराज कुशल से रहें । सुनो, उधर सितार बजाया जाता है, इधर लड़के हर्ष से चिल्लाते हैं ।

हरी—तो मुझ से भी बिना कुछ कहे नहीं रहा जाता । मुझे रोको, नहीं मैं उछलने चाहता हूँ ।

केशव—अच्छा प्रार्थना करके उछलना । हाँ, इस दोहे पढ़ डालो ।

हरी—तुम तो मुझ ही से पढ़वाते हो, लिखवाते हो, उछलवाते हो, तु भी कुछ कर सकते हो ?

केशव—तुम चाहे जो कुछ कहो, मैं अपना काम करता ही रहूँगा।

हरी—क्या क्या काम किया है ?

केशव—पारसाल तो एक चौपाई रोज़ लिखता था, फिर दो दो लिखे फिर चार चार भी लिखता पर समय नहीं मिला। सब मिला क ५०० लिखी होंगी।

हरी—तुम से चौपाइयाँ भी खूब लिखी जाती हैं। मैं भी महाराज प्रशंसा में कुछ लिखूँगा।

(२) गुरु जन लाज समाज बड़ि, देखि सीय सकुचानि।
लगी विलोकन सखिन तन, रघुवीरहि उर आनि॥

(३) बोले बन्दी वचन वर, सुनहु सकल महिपाल।
प्रण विदेह कर कहहिँ हम, भुजा उठाय विशाल॥

ऊपर के दोहों का वाच्यपरिवर्तन करो।

अध्याय १२

अव्यय।

अव्ययों के भेद नीचे लिखे जाते हैं—

(१) **क्रियाविशेषण**–ऐसे अव्यय जो क्रिया के अर्थ को बढ़ा कर उस में कोई विशेष बात पैदा करते हैं; जैसे 'जल्द,' 'आज' आदि। इनका वर्णन पहले हो चुका है।

(२) **संबंधवाचक**–ऐसे अव्यय जिन से जाना जाता है कि संज्ञा में और वाक्य के दूसरे शब्दों में क्या लगाव है जैसे 'मेरे साथ चलो,' 'पेड़ के तले खड़े हो,' इन वाक्यों में 'मेरा'

और 'पेड़' का लगाव वाक्य में दिखलाया गया है इसलिए 'साथ' और 'तले' शब्द संबंधवाचक अव्यय हैं। इसी प्रकार 'आगे, पीछे, बदले, बीच, भीतर' आदि जानो।

(३) समुच्चयबोधक—ऐसे अव्यय जो दो शब्दों या वाक्यों या वाक्य के खंडों को मिलाते हैं या जुदा करते हैं। मिलाने वाले अव्ययों को 'संयोजक' और जुदा करने वालों को 'विभाजक' कहते हैं। जैसे 'राम और गोविंद आए,' इस वाक्य में दोनों का आना कहा जाता है। 'राम' व 'गोविन्द' अलग अलग आदमी हैं, परंतु 'और' शब्द से दोनों मिलाये गए हैं। इसलिए 'और' शब्द 'संयोजक' है। इसी तरह 'भी, तो, यदि' आदि भी जानो।

'कृष्ण या दामोदर को आना चाहिए' इस वाक्य में दो आदमियों का नाम लिया गया है, परन्तु आना एक ही को चाहिए, चाहे कृष्ण आवे, चाहे दामोदर। 'या' शब्द दोनों आदमियों के अर्थ को जुदा करता है, इसलिए 'विभाजक' है। इसी तरह 'वा, परन्तु, किन्तु' आदि भी जानो।

(४) इंगितबोधक या विस्मयादिसूचक—ऐसे अव्यय जो मन के भाव को अर्थात् आश्चर्य, हर्ष, शोक, पीड़ा, आदि को प्रकट करते हैं। जैसे 'वाह वाह! पहलवान' इस वाक्य में 'वाह वाह' शब्द उस विस्मय को बतलाते हैं जो किसी चतुर पहलवान के करतब को देख कर मन में पैदा हुआ है। इसी प्रकार 'आह, हाय, धन्य' आदि जानो।

(५) उपसर्ग--ऐसे अव्यय जो दूसरे शब्दों में जुड़ कर उनके अर्थ में भेद कर देते हैं। उपसर्ग संस्कृत में होते हैं और वही संस्कृत शब्द भाषा में भी आते हैं। जैसे 'गमन (जाना), आगमन (आना), निर्गमन (निकलना), संगमन (मिलना)', एकही 'गमन' शब्द में 'आ' 'निर्' 'सं' उपसर्ग जोड़ने से अर्थ बदल गया। इसी तरह 'प्र, अप, दुर, वि, नि' आदि जानो।

कारकों के चिह्न 'ने, को, है, से,' आदि भी अव्यय हैं, और इनको 'विभक्ति' कहते हैं।

अभ्यास—

इन वाक्यों में अव्यय शब्द और उनके भेद बताओ—

हम और तुम चलें, पर अपने साथ सिवा मोहन के और किसी को न ले जावेंगे। तुम्हारे घर के पीछे सड़क पर सदा लोग आया जाया करते हैं परन्तु तुम तो घर के भीतर ऐसे निरुद्ध से रहते हो कि कभी संगति भी नहीं होती। वाह, तुमको तो ऐसा न चाहिए। अरे! खेल हो गया।

अध्याय १३

समास।

लिखने पढ़ने में जितने शब्द आते हैं उनमें कुछ तो अकेले अकेले होते हैं, परन्तु बहुत से शब्द दो दो तीन या अधिक शब्दों से मिल कर बने होते हैं और उनके बीच में कोई विभक्ति नहीं प्रकट रहती। शब्दों के ऐसे जोड़ का नाम 'समास' या

छोटा करना है, क्योंकि विभक्ति अर्थात् कारक का चिह्न 'को' 'से' आदि छोड़ देने से शब्द का रूप छोटा हो जाता है। जैसे 'देवकीनंदन' यह एक शब्द है, परन्तु 'देवकी' और 'नंदन' दो शब्दों से बना है; इन दोनों के बीच में कोई विभक्ति नहीं है। 'देवकी का नंदन' यह पूरा रूप है, परन्तु, 'का' के छोड़ देने से 'देवकीनंदन' यह छोटा रूप रह गया। इसी का नाम 'समास' है। ऐसे ही 'जगन्नाथमाहात्म्य' का पूरा रूप है 'जगत् के नाथ का माहात्म्य।'

जिन शब्दों में समास होता है उनका बल यकसाँ नहीं होता, किन्तु उनमें से किसी का अर्थ मुख्य हो जाता है और दूसरे शब्द उस अर्थ को पुष्ट करते हैं। अर्थात् कभी तो पहला शब्द मुख्य होता है, कभी दूसरा, कभी दोनों, और कभी उन शब्दों के अलावा एक तीसरी वस्तु का अर्थ निकलता है। इसी कारण समास के छः भेद हो जाते हैं।

१ अव्ययीभाव ।

पहला शब्द अव्यय होता है और उसका अर्थ मुख्य होता है, पूरे समासांत शब्द का प्रयोग क्रियाविशेषण की तरह होता है। जैसे 'मैं तुमको **यथाशक्ति** सहायता दूँगा' इस वाक्य में 'यथाशक्ति' शब्द क्रियाविशेषण है, अर्थात् **जितनी** शक्ति मुझ में है उससे सहायता दूँगा। यहाँ पर 'यथा' (जितनी) अव्यय शब्द का अर्थ मुख्य है अर्थात् उस शक्ति से कम या अधिक

नहीं । इसलिए 'यथाशक्ति' शब्द में 'अव्ययीभाव समास' है इसी प्रकार 'अतिकाल' 'अनुरूप' आदि जानो ।

२ तत्पुरुष ।

दूसरे पद का अर्थ मुख्य होता है और पहले पद में कर्त्ता कारक को छोड़ कर और सब कारक आते हैं । जैसे 'राजपुरुष (या राजा का आदमी) आया है' । यहाँ पर कहने वाले का मतलब 'पुरुष' या आदमी से है' 'राजा' से नहीं, क्योंकि 'राजा नहीं आया' 'पुरुष आया है' । इसलिए दूसरा पद 'पुरुष' मुख्य है; और पहले पद 'राजा' में सम्बन्ध कारक है । इसी प्रकार 'सुखप्राप्त, दुःखरहित, कार्यनिपुण' आदि शब्दों में 'तत्पुरुष' समास है ।

३ द्विगु ।

दूसरा शब्द मुख्य होता है और पहला शब्द संख्यावाचक अर्थात् किसी गिनती का नाम होता है । इस समास से बहुधा जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समाहार या समूह है; जैसे 'नवरत्न' में 'नव' एक संख्या या गिनती का नाम है और 'रत्न' शब्द प्रधान है, क्योंकि जो कोई तुमसे 'नवरत्न' मांगेगा वह 'रत्न' पाने की आशा रक्खेगा, न कि 'नव' की । इसी प्रकार 'त्रिलोकी,' 'चतुर्वर्ण' आदि में भी 'द्विगु समास' है और उससे समूह का अर्थ निकलता है, जैसे 'तीनों लोकों का समूह = त्रिलोकी' ।

४ द्वंद्व।

दोनों (या जितने शब्द हों सब) प्रधान होते हैं, और उन सब के बीच में 'और' का अर्थ छिपा रहता है। जैसे 'मातापिता की सेवा करो' इसमें 'माता और पिता की सेवा करो' यह अर्थ है और 'माता' शब्द वा 'पिता' शब्द दोनों मुख्य हैं; क्योंकि दोनों की सेवा से मतलब है। इसी प्रकार 'रामकृष्ण, हाथपैर, घर-दुआर, अन्नजल' आदि में 'द्वंद्वसमास' है।

५ कर्मधारय।

दोनों पद प्रधान होते हैं। पहला पद या तो विशेषण होता है या विशेषण का काम करता है और दूसरा पद भी या तो विशेषण होता है या पहिले विशेषण का विशेष्य होता है। जैसे 'उस के नख श्वेतरक्त हैं' यहाँ पर 'श्वेतरक्त' शब्द में दोनों पद विशेषण हैं और दोनों प्रधान हैं, क्योंकि नखों को श्वेतरक्त होने के लिए 'श्वेत' और 'रक्त' दोनों होना चाहिए। 'सज्जन' शब्द में 'सत् (अच्छा)' विशेषण है और 'जन (आदमी)' विशेष्य है, इस लिए इन शब्दों में 'कर्मधारय समास' है।

नोट—द्वन्द्व और कर्मधारय का भेद अच्छी तरह देख लो कि द्वन्द्व में जितने शब्द होते हैं उतनी ही वस्तुओं से मतलब होता है; जैसे 'हाथ—पैर' में 'हाथ' और 'पैर' दो अलग अलग चीज़ों से मतलब है। परन्तु कर्मधारय में दोनों शब्द एक ही वस्तु के लिए आते हैं; जैसे जब एक ही वस्तु नख श्वेत भी है और रक्त भी है तो उसे श्वेतरक्त कहते हैं।

६ बहुव्रीहि ।

दिए हुए शब्दों में से किसी का अर्थ मुख्य नहीं होता किन्तु उन्हीं शब्दों को जोड़ने से एक नया अर्थ पैदा हो जाता है वह प्रधान होता है। जैसे 'चन्द्रशेखर' शब्द में 'चन्द्र' चन्द्रमा का नाम है और 'शेखर' शिर का नाम है, परन्तु पूरा शब्द 'चन्द्रशेखर' न चंद्रमा है और न शिर, किन्तु 'महादेव' का नाम है, अर्थात् ऐसा कोई जिसके 'शेखर' या शिर पर 'चंद्र' है इसी प्रकार 'बहुधन, चंद्रमुखी, वज्रायुध' आदि में 'बहुव्रीहि समास' है।

नोट १—जब कभी बहुत से शब्द एक ही समास में मिले हों तो अर्थ के अनुसार उन सब को अलग कर सकते हैं। जैसे 'गवनी बाल मरालगति सुखमा अंग अपार' यहाँ पर 'बाल (छोटा)' विशेषण है और 'मराल (हंस)' विशेष्य है; दोनों में कर्मधारय समास है। फिर 'बालमराल' को एक शब्द मान कर 'गति (चाल)' शब्द के साथ बहुव्रीहि समास हुआ, अर्थात् सीता जिन की 'गति' या चाल 'बालमराल' या छोटे हंस की चाल के समान है।

नोट २—समास का भेद अर्थ से जाना जाता है, अर्थात् किसी समासांत शब्द का एक अर्थ लें तो एक समास होता है; कोई दूसरा अर्थ लें तो दूसरा समास होता है। जैसे 'पीताम्बर' (पीत = पीला + अंबर = कपड़ा) का अर्थ 'पीला कपड़ा' लगावें तो इसके दोनों शब्दों का अर्थ प्रधान है और कर्मधारय समास है। परन्तु यदि यह अर्थ लगावें कि 'पीले कपड़े वाला' तो 'पीतांबर' शब्द से 'विष्णु' का अर्थ निकला, इस लिए बहुव्रीहि समास है।

नोट ३—समासांत शब्दों के टुकड़ों या पदों को अलग अलग करने का नाम 'विग्रह' है ।

अभ्यास—

इन वाक्यों में जितने समासांत शब्द हों उनका विग्रह करो—

(१) प्रेममगन कौशल्या, निशिदिन जात न जान ।
सुतस्नेहवश मातु सब, बालचरित कर गान ॥
(२) दिखरावा मातहि निज अद्भुतरूप अखंड ।
(३) शोभासींव सुभग दोउ वीरा ।
नीलपीतजलजातशरीरा ॥
(नील + पीत = द्वंद; नीलपीत + जलजात (कमल) = कर्मधारय; नीलपीतजलजात + शरीरा = बहुव्रीहि) ।
(४) रेखा रुचिर कंबुकलग्रीवा ।
जिमि त्रिभुवनसुखमा की सींवा ॥
(५) विहरहिँ वन चहुँ ओर प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।

अध्याय १४

तद्धित और कृदंत ।

प्रत्यय—वे अक्षर जो किसी शब्द में लग कर उसके रूप और अर्थ में थोड़ा सा भेद कर देते हैं, 'प्रत्यय' कहलाते हैं । जैसे विशेषण शब्द 'चिकना' में 'हट' जोड़ने से भाववाचक 'चिकनाहट' शब्द बना तो 'हट' शब्द प्रत्यय है ।

तद्धित ।

जब संज्ञा शब्द में कोई प्रत्यय जोड़ कर दूसरा संज्ञा शब्द बनाते हैं तो ऐसे प्रत्यय को 'तद्धित' प्रत्यय कहते हैं और जो शब्द बनता है उसे 'तद्धितांत' शब्द कहते हैं। ऐसे प्रत्यय कई अर्थों में आते हैं; जैसे—

(१) 'अपत्यवाचक' (संतान का बतलाने वाला; 'दशरथ' का पुत्र 'दाशरथि' 'वसुदेव' का पुत्र 'वासुदेव,' 'पर्वत' की कन्या 'पार्वती' आदि।

(२) संबंधवाचक (किसी प्रकार का लगाव बतलाने वाला), 'विष्णु' का भक्त 'वैष्णव,' 'सुवर्ण' से बनी वस्तु 'सौवर्ण', 'कुंकुम' से रँगा कपड़ा 'कौंकुम', 'देह' में होने वाला 'दैहिक', 'वर्ष' में एक बार होने वाला 'वार्षिक', 'धन' रखने वाला 'धनी', 'लकड़ी' बेचने वाला 'लकड़हारा', 'क्रोध' वाला 'क्रोधित' आदि।

(३) भाववाचक; 'छोटा' से 'छोटाई' या 'छोटापन' 'लड़का' से 'लड़कपन' 'बुड्ढा' से 'बुढ़ापा', 'उत्तम' से 'उत्तमता,' 'ब्राह्मण' से 'ब्राह्मणत्व' आदि।

(४) अल्पतावाचक (छोटापन बतलानेवाला); 'खाट' से छोटी 'खटिया', 'डिब्बा' से छोटी 'डिबिया', 'कठौता' से छोटी 'कठौती' आदि।

कृदंत ।

जब धातु में कोई प्रत्यय जोड़ कर संज्ञा शब्द बनाते हैं तब ऐसे प्रत्यय को 'कृत्' प्रत्यय कहते हैं और जो शब्द बनता है उसको 'कृदंत' शब्द कहते हैं। यह प्रत्यय भी कई अर्थों में आते हैं; जैसे—

(१) कर्तृवाचक; देनेवाला, जानेहारा या जानहार, गवैया, पाठक आदि ।

(२) कर्मवाचक; 'देखा हुआ (मेला), लिखित (ग्रंथ)' आदि ।

(३) भाववाचक; 'समझ, पुकार, लेन, देन, पढ़ाई, बनावट, चाल, बोलनि, घुमाव, मेल, मिलाप, जानना' (जैसे विद्या का जानना अच्छा है) आदि ।

(४) करणवाचक; कतरनी, बेलन आदि ।

(५) क्रियावाचक; पढ़ता हुआ, आते जाते आदि ।

अभ्यास—

इन वाक्यों के मोटे शब्दों में तद्धितांत और कृदंत शब्द अलग करो। किस प्रकृति (मूल शब्द अर्थात् संज्ञा या क्रिया) में किस अर्थ से प्रत्यय लगाया गया है ?

(१) अपनी माता के **समझाने बुझाने** में शङ्खचूड़ को विलंब हो गया और गरुड़ जी के **आगमन** से समुद्र में लहरें उठने लगीं ।

(२) शंखचूड़ चाहता था कि जीमूतवाहन के शरीर से **गिरे हुए** रक्त बिन्दुओं को **देखते देखते** गरुड़जी के पास मेरी **पहुँच** हो जावे ।

(३) तब प्रभु बोलि लिए हनुमाना। लंका जाहु कहेउ भगवाना॥
(४) पीत झीन झँगुलि तनु सोही। किलकनि चितवनि भावत मोही
(५) कौशिक कहेउ मोर मन माना। इहाँ रहिय रघुवीर सुजाना॥

अध्याय १५

वाक्यच्छेद और पदव्याख्या।

पहले हम कह चुके हैं कि हर वाक्य के दो बड़े भाग अर्थात् उद्देश्य और विधेय होते हैं और फिर इन के भी छोटे भाग होते हैं। इस अध्याय में इन छोटे भागों का विचार किया जावेगा।

वाक्य——जब कई शब्द इकट्ठा हो के कोई पूरा अर्थ पैदा करते हैं तो उसे 'वाक्य' कहते हैं। अर्थ के पूरा करने के लिए कर्त्ता और क्रिया का होना आवश्यक है।

यदि किसी वाक्य में एक ही क्रिया हो तो उसे 'अमिश्रित' या 'असंकीर्ण' अर्थात् अकेला वाक्य कहते हैं; जैसे 'पहलवान कसरत करता है'। यदि एक से अधिक क्रियाएँ हों तो उसे 'संकीर्ण' या 'मिश्रित' अर्थात् मिला हुआ वाक्य कहते हैं। संकीर्ण वाक्य को तोड़ कर कई असंकीर्ण वाक्यों में बाँट सकते हैं जिन का संबंध या लगाव अच्छी तरह सोचने से प्रकट हो जाता है। जैसे 'देवदत्त ने कहा कि मैं चिट्ठी लिखूँगा' यहां पर 'देवदत्त

ने कहा' एक वाक्य है, 'मैं चिट्ठी लिखूँगा' द्वितीय वाक्य है। प्रथम वाक्य में पूछा जा सकता है कि 'देवदत्त ने क्या कहा' अर्थात् 'कहा' का 'कर्म' क्या है? उत्तर हुआ कि 'मैं चिट्ठी लिखूँगा' यह 'कर्म' है। यहाँ पर 'मैं चिट्ठी लिखूँगा' यह बात प्रथम बात का 'आश्रय' या भरोसा रखती है, अर्थात् उस बात का एक अंग है और प्रधान नहीं हो सकती। इस उदाहरण से केवल 'देवदत्त' का कुछ कहना पाया जाता है, इस लिए 'देवदत्त ने कहा' यही एक बात प्रधान है और दूसरी उस के 'आश्रित' है।

दूसरा उदाहरण लो; 'मैं काम करूँगा, पर रुपया ले लूँगा,' इस में काम का करना और रुपये का लेना दो बातें पाई जाती हैं और दोनों प्रधान हैं, इस लिए दोनों बातें 'निराश्रय' हैं अर्थात् एक दूसरे पर भरोसा नहीं करतीं, या एक दूसरे का अंग नहीं हैं।

ध्यान देकर देख लेना चाहिए कि पहले उदाहरण में अगर 'मैं चिट्ठी लिखूँगा' यह दूसरी बात निकाल डाली जावे तो पहली बात से पूरा अर्थ नहीं निकल सकेगा अर्थात् सुनने वाला पूछेगा कि देवदत्त ने क्या कहा। इसी लिए दूसरी बात पहली बात के 'आश्रित' है। परन्तु दूसरे उदाहरण में अगर 'मैं रुपया ले लूँगा' यह दूसरी बात निकाल डाली जाय तब भी 'मैं काम करूँगा' यह पहली बात पूरा अर्थ देती है। इसी लिए दोनों बातें 'निराश्रय' हैं।

आश्रित वाक्यों का प्रयोग तीन तरह से होता है, अर्थात् (१) नाम की तरह से, (२) विशेषण की तरह से, और (३) क्रिया विशेषण की तरह से।

(१) जब कोई आश्रित वाक्य संज्ञा का काम देता है अर्थात् जब उसका प्रयोग कर्त्ता, कर्म, करण आदि किसी कारक में नाम की तरह होता है तो उसे 'संज्ञा वाक्य' कहते हैं। जैसे साधु कहता है कि 'भूखों को भोजन दो,' इसमें 'भूखों को भोजन दो' यह वाक्य 'कहता है' क्रिया का कर्म है। 'लो मीठे मीठे आम' की ध्वनि चारों ओर सुनाई देती है। इसमें 'लो मीठे मीठे आम' यह वाक्य सम्बन्ध कारक में है।

(२) जब कोई वाक्य किसी संज्ञा के विशेषण का काम देता है तो उसे 'विशेषण वाक्य' कहते हैं। जैसे 'वह आदमी जो कल आया था आज भी आया है' इसमें 'जो कल आया था' यह वाक्य 'आदमी' का विशेषण है; इस लिए यह 'विशेषण वाक्य' है।

(३) जब कोई वाक्य किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है तो उसे 'क्रियाविशेषण वाक्य' कहते हैं। जैसे 'जब पानी बरसता है तब मेंढक बोलते हैं' इसमें 'जब पानी बरसता है' यह वाक्य प्रधान क्रिया 'बोलते हैं' का समय बतलाता है, इस लिए 'क्रिया विशेषण वाक्य' है।

नीचे के उदाहरण की तरह यह सब बातें वाक्यच्छेद में दिखला देनी चाहिएँ।

वाक्य—जब पानी बड़े वेग से बरसता था और ठंढी हवा चलती थी, एक अंधा आदमी जो रास्ता भूल गया था मुझ से कहने लगा कि भाई, कृपा करके मुझे थोड़ी देर ठहरने दो, नहीं तो मैं इस पानी में मर जाऊँगा ।

(क) एक अंधा आदमी मुझसे कहने लगा (प्रधान वाक्य)

(ख) जो रास्ता भूल गया था ((क) के आश्रित विशेषण वाक्य)

(ग) भाई, कृपा करके मुझे थोड़ी देर ठहरने दो । ((क) के आश्रित संज्ञा वाक्य)

(घ) नहीं तो मैं इस पानी में मर जाऊँगा ((क) के आश्रित संज्ञा वाक्य और (ग) से अनाश्रय संकीर्ण)

(ङ) जब पानी वड़े वेग से बरसता था ((क) के आश्रित क्रिया-विशेषण वाक्य)

(च) और (जब) ठंढो हवा चलती थी ((क) के आश्रित क्रिया-विशेषण वाक्य और (ङ) से अनाश्रय संकीर्ण)

नोट—सब बातों का आपस का संबंध दिखलाने के लिए छोटे छोटे वाक्यों के नाम (क), (ख) आदि रख लिए गए हैं ।

उदाहरण के लिए नीचे लिखी बातों का पूरा वाक्यच्छेद चक्र में दिखलाया जावेगा ।

१. पहलवान कसरत करता है ।
२. देवदत्त ने कहा कि मैं चिट्ठी लिखूँगा ।
३. मैं काम करूँगा, पर रुपया ले लूँगा ।
४. मेरी पुस्तक जो कल खोगई थी आज हरिहर के घर में मिली ।
५. जब तुम लखनऊ जाना तो मुझ से बतलाना; मैं वहाँ से अच्छे फल मँगाऊँगा ।

६. जो लड़के कठिन परिश्रम करते हैं उन सब को अध्यापक लोग बहुत मानते हैं ।

७. अस कहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपट मृग नीच ।
देव हर्ष विस्मय विवश, चातक वर्षा बीच ॥

८. बलि बाँधत प्रभु बाढ़ेउ, सो तनु बरणि न जाय ।
उभय घरी महँ दीन्ह मैं सात प्रदक्षिण धाय ॥

९. अंगद कहा जाउँ मैं पारा ।
जिय संशय कछु फिरती बारा ॥

१०. जामवंत कह तुम सब लायक ।
किमि पठवौं सबही कर नायक ॥

११. 'जो देगा वह पावेगा' यही सब का निचोड़ है ।

नोट—चक्र में जो शब्द कोष्ठ (ब्राक्यट) में ( ) इस प्रकार बंद हैं उन से यह मतलब है कि वे शब्द उस वाक्य में प्रकट नहीं हैं, किन्तु छिपे हैं, पर उन का अर्थ वहाँ पर है। जैसे 'किमि पठवौं सबही कर नायक' इस वाक्य में कर्त्ता 'मैं' शब्द छिपा है। [आगे का चक्र देखो]।

पदव्याख्या ।

पदव्याख्या में किसी पद का भेद, उसका रूप, विशेषता, और वाक्य में उसका संबन्ध दिखलाया जाता है । जैसे 'देवदत्त ने कहा कि मैं पुस्तकें पढ़ूँगा' इस वाक्य में शब्दों की व्याख्या यह है ।

देवदत्त—व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, अन्य पुरुष, कर्त्ता कारक 'कहा' क्रिया का ।

ने—अव्यय, कर्त्ता का चिह्न ।

कहा—सकर्मक क्रिया, सामान्यभूतकाल, पुँल्लिङ्ग, एकवचन,

वाक्य		वाक्य का भेद	लगाव के शब्द	कर्त्ता	कर्त्ता का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार
१ पहलवान कसरत करता है		असंकीर्ण		पहलवान		कसरत		करता है	
२ देवदत्त ने कहा	(क)	प्रधान		देवदत्त ने		(ख)		कहा	
कि मैं चिट्ठी लिखूँगा	(ख)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्य	कि	मैं		चिट्ठी		लिखूँगा	
३ मैं काम करूँगा	(क)	प्रधान		मैं		काम		करूँगा	
पर (मैं) रुपया खेलूँगा	(ख)	प्रधान (क) से अनाश्रय संकीर्ण	पर	(मैं)		रुपया		खेलूँगा	
४ मेरी पुस्तक आज हरिहर के घर में मिली	(क)	प्रधान		पुस्तक	१ मेरी, २ (ख)			मिली	(१) आज, (२) हरिहर के घर में
जो कल खो गई थी	(ख)	(क) के आश्रित विशेषण वाक्य		जो				खोगई थी	कल
५ जब तुम लखनऊ जाना	(क)	(ख) के आश्रित क्रियाविशेषण वाक्य		तुम		लखनऊ		जाना	जब
तो मुझ से बतलाना	(ख)	प्रधान	तो	(तुम)		मुझ से		बतलाना	(क)
मैं वहाँ से अच्छे फल मँगाऊँगा	(ग)	प्रधान (ख) से अनाश्रय संकीर्ण		मैं		फल	अच्छे	मँगाऊँगा	वहाँ से
६ जो लड़के अधिक परिश्रम करते हैं	(क)	(ख) के आश्रित विशेषण वाक्य		लड़के	जो	परिश्रम	अधिक	करते हैं	
उन सबको...मानते हैं (पृष्ठ ६०)	(ख)	प्रधान		अध्यापक लोग		उनको	१ सब; २ (ख)	मानते हैं	बहुत

वाक्य	वाक्य का भेद	लगाव के शब्द	कर्त्ता	कर्त्ता का विस्तार	कर्म	कर्म का विस्तार	क्रिया	क्रिया का विस्तार
७ अस कहि चले तहाँ प्रभु (क)	प्रधान		प्रभु	अस कहि			चले	तहाँ, (ख)
जहाँ कपट मृग नीच (था) (ख)	(क) के आश्रित क्रियाविशेषण वाक्य		मृग	कपट, नीच			(था)	जहाँ
देव हर्ष विसमय विवश (उसी प्रकार थे) (ग)	प्रधान (क) से अनाश्रय संकीर्ण	(और)	देव	हर्ष विस्मय विवश			(थे)	(उसी प्रकार), (घ)
(जैसे) चातक वर्षा बीच (हर्ष विस्मय विवश होता है।) (घ)	(ग) के आश्रित क्रियाविशेषण वाक्य		चातक	[हर्ष विस्मय विवश]			(होता है)	(१) (जैसे), (२) वर्षा बीच
८ बलि बांधत प्रभु बाढ़ेउ (क)	प्रधान		प्रभु	बलि बांधत			बाढ़ेउ	
सो तनु बरणि न जाय (ख)	प्रधान (क) से अनाश्रय संकीर्ण		तनु	सो			बरणि जाय	न
उभय घरी ... ... धाय (ग)	प्रधान (क) (ख) से अनाश्रय सं०		मैं	धाय	प्रदक्षिण	सात	दीन्ह	उभय घरी महँ
९ अंगद कहा (क)	प्रधान		अंगद		(ख, ग)		कहा	
(कि) जाउँ मैं पारा (ख)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्य	(कि)	मैं				जाउँ	पारा
(परंतु) जिय ... बारा (है) (ग)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्य और (ख) से अनाश्रय संकीर्ण	(परंतु)	संशय	कछु			(है)	(१) जिय (में), (२) फिरती बारा
१० जामवंत (ने) कहा (क)	प्रधान		जामवंत (ने)		(ख, ग)		कहा	
(कि) तुम सब लायक (हो) (ख)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्य	(कि)	तुम	सब लायक			हो	
(पर मैं) किमि...नायक (को) (ग)	(क) के आश्रित संज्ञा वाक्य और (ख) से अनाश्रय संकीर्ण	(पर)	मैं		नायक (को)	सबही कर	पठवौं	किमि
११ जो कुछ देगा (क)	(ख) के आश्रित विशेषण वाक्य		जो		(कुछ)		देगा	
वह (वही वस्तु) पावेगा (ख)	(ग) के आश्रित संज्ञा वाक्य		वह	(क)	वस्तु	(वही)	पावेगा	
यही सब का निचोड़ है (ग)	प्रधान		यही	(क, ख) सब का निचोड़			है	

अन्यपुरुष, कर्तृवाच्य, इसका कर्त्ता 'देवदत्त' है और कर्म 'मैं पुस्तकें पढ़ूँगा' है ।

कि—अव्यय शब्द, दो वाक्यों को जोड़ता है ।

मैं—पुरुषवाचक सर्वनाम संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, उत्तमपुरुष. कर्त्ता कारक 'पढ़ूँगा' क्रिया का ।

पुस्तकें—जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन, अन्यपुरुष. कर्म कारक 'पढ़ूँगा' क्रिया का ।

पढ़ूँगा—सकर्मक क्रिया, भविष्यत्काल, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, उत्तम पुरुष, कर्तृवाच्य, कर्त्ता 'मैं' के अनुसार, इसका कर्म 'पुस्तकें' है ।

'भाई, तुम्हारा अच्छा काम देखकर तब मासिक बढ़ाया जावेगा'

भाई—जातिवाचक संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, अन्यपुरुष. संबोधन कारक ।

तुम्हारा—पुरुषवाचक सर्वनाम संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, आदरार्थक बहुवचन, मध्यमपुरुष, संबन्धकारक 'काम' से ।

अच्छा—विशेषण संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, इसका विशेष्य 'काम' है ।

काम—जातिवाचक संज्ञा, पुँल्लिङ्ग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्म कारक 'देखकर' क्रिया का ।

देखकर—सकर्मक क्रिया, पूर्वकालिक, इस का कर्म 'काम' है ।

तब—समयवाचक अव्यय, क्रियाविशेषण 'बढ़ाया जावेगा' क्रिया का ।

मासिक—विशेषण का प्रयोग जातिवाचक संज्ञा की तरह, पुँल्लिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, कर्त्ता कारक 'बढ़ाया जावेगा' क्रिया का।

बढ़ाया जावेगा—सकर्मक क्रिया, भविष्यत्काल, पुँल्लिङ्ग. एक-वचन, अन्यपुरुष, कर्मवाच्य में, इस का कर्त्ता 'मासिक' है।

अभ्यास—

इन वाक्यों का वाक्यच्छेद करो और प्रथम पांच वाक्यों की पद-व्याख्या करो—

(१) मेरा छोटा भाई जो तुम को कल मिला था पास हो गया।
(२) हर पुरुष को सदा ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए।
(३) सत्य बोलने वाले पूजे जावेंगे और झूठे लोग मारे जावेंगे।
(४) आप जब आते हैं तब मिठाई लाते हैं।
(५) पठवा बालि होय मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह शैला।
(६) उसके मन में सदा यही बात रहती है कि लोगों की भलाई कैसे करूँ।
(७) सबेरे का उठना भी बहुत अच्छा होता है।
(८) हमारे महाराज चिरंजीवी हों।

अध्याय १६

परिशिष्ट।

व्याकरण—शुद्ध बोलना और लिखना सिखाने वाली विद्या है।

शब्द—जो कुछ कान से सुनाई देता है उसे शब्द कहते हैं।

सार्थक शब्द—वह है जिसका कुछ अर्थ हो; संज्ञा आदि इसी के भेद हैं।

निरर्थक शब्द—वह है जिसका कुछ अर्थ न हो, जैसे चिड़ियों की बोली।

नोट—बहुत से निरर्थक शब्द भी बोल चाल में आ जाते हैं। वे कभी कभी बोलने वाले को बीच में आड़ सी दे देते हैं, कभी बात में थोड़ी सी शोभा देते हैं, और कभी और कोई अर्थ उन से निकाल लिया जाता है। जैसे 'घोड़े के लिए दाना दनका कुछ भी नहीं है', 'अरे मोहन, कुछ पानी वानी लाओगे या नहीं' ? 'वह न मालूम क्या अल्लम ग़ल्लम बक गया'।

अक्षर—शब्द के सब से छोटे भाग को जिस के और छोटे भाग न हो सकें 'अक्षर' कहते हैं। अक्षर दो प्रकार के होते हैं— स्वर और व्यंजन।

स्वर—जो अक्षर बिना दूसरे अक्षर की मदद के मुँह से निकले उसे 'स्वर' कहते हैं। अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, स्वर हैं।

व्यंजन—जो अक्षर स्वर की मदद से मुँह से निकले उसे 'व्यंजन' कहते हैं। क से लेकर ह तक, अर्थात् स्वरों को छोड़ कर और अक्षर 'व्यंजन' हैं।

संयुक्त अक्षर—जब दो या अधिक व्यंजन एक में मिले होते हैं, जैसे 'पुस्तक' में स् और त् मिले हैं, 'मत्स्य' में त्, स्, और य् मिले हैं।

ह्रस्व—वह अक्षर जिस के कहने में एक मात्रा समय लगे; जैसे 'गुण', 'पति', 'ऋषि' में सब अक्षर ह्रस्व हैं। इसी को बहुधा लड़के 'छोटा अक्षर' कहते हैं।

दीर्घ—जिसके कहने में दो मात्रा अर्थात् ह्रस्व से दूना समय लगे; जैसे 'सीता', 'आलू' में सब अक्षर दीर्घ हैं। इसे बहुधा लड़के 'बड़ा अक्षर' कहते हैं।

संधि—जब दो अक्षर एक में मिल कर अपना तीसरा रूप पैदा करते हैं; जैसे राम + ईश्वर = रामेश्वर; जगत् + नाथ = जगन्नाथ; जगत् + ईश्वर = जगदीश्वर।

अनुस्वार—जब किसी अक्षर पर बिंदी लगाकर उसे मुँह और नाक के द्वारा पढ़ते हैं तो उस बिंदी को 'अनुस्वार' कहते हैं; जैसे 'हिंदी', 'ऊँट' आदि में।

विसर्ग—जब किसी अक्षर के दाहिनी तरफ़ दो बिंदियाँ रखते हैं तब इन्हें विसर्ग कहते हैं; जैसे 'छः' 'ज़ियादः' आदि में।

गद्य—जिस भाषा में अक्षरों की गिनती आदि का विचार नहीं करते उसे 'गद्य' कहते हैं; ऊपर की सब बातें गद्य में लिखी हैं; हम लोग गद्य ही में बातचीत करते हैं।

पद्य—जब अक्षर तौल नाप कर किसी बँधी हुई संख्या में लिखे जाते हैं तो उसे 'पद्य' कहते हैं; जैसे दोहा और सोरठा में ४८ मात्राएँ होती हैं; और चौपाई के हर एक पाद में १६ होती हैं।

उदाहरण—

श्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि।

बरणौं रघुवर विमल यश जो दायक फल चारि ॥

जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मंगल मोद बधाए ॥

यहां पर ह्रस्व अक्षरों की एक एक और दीर्घ अक्षरों की दो दो मात्राएँ जोड़ी गई हैं ।

पद्य में व्याकरण का इतना अधिक विचार नहीं किया जाता जितना गद्य में, और उसमें वहुत से शब्द जोड़ मिलाने के लिए तोड़ मरोड़ डाले जाते हैं; परंतु इस से पद्य की शोभा नहीं घटती । जैसे—

परेउ (पड़ा) धरणि तल दंड जिमि ।

परम रंक (ने) जनु (जैसे) पारस पावा (पाया) ।

ससि (शस्य) संपन्न सोह (सोहती है) महि कैसी ।

अँगरेज़ी आदि भाषाओं में बड़े बड़े कवियों के पद्यों के व्याकरण अलग अलग बने हैं; और यहां भी विद्वानों को ऐसे ग्रंथ बनाने चाहिएँ ।

गौरव—जब किसी वाक्य के किसी शब्द को ज़ोर से कहते हैं तो वाक्य में उस का अर्थ भी बलवान हो जाता है; इस ज़ोर का नाम 'गौरव' है । भिन्न भिन्न शब्दों को गौरव देने से अर्थ में थोड़ा थोड़ा भेद हो जाता है । जैसे 'मिहनत का फल मीठा होता है' इस वाक्य में मिहनत पर गौरव देने से यह अर्थ

हुआ कि आलस्य का फल बुरा है, इस लिए अगर अच्छा फल चाहते हो तो मिहनत करो ।

फल—पर गौरव देने से यह अर्थ हुआ कि करने में तो मिहनत बुरी चीज़ है क्योंकि उस में दुःख होता है, पर उस की अच्छाई 'फल' में है ।

मीठा—पर गौरव डालने से यह अर्थ हुआ कि मिहनत से किसी प्रकार की बुराई का डर नहीं है; उस से भलाई ही निकलेगी ।

होता है—पर गौरव देने से यह अर्थ हुआ कि उस के मीठे होने में कोई संदेह नहीं, वह अवश्य ही मीठा होता है ।

इसी प्रकार जहां जिस अर्थ की ज़रूरत हो वहां उसी प्रकार गौरव देना चाहिए ।

इस पुस्तक में व्याकरण-संबंधी जो शब्द आए हैं उन का अँगरेज़ी में अनुवाद दिया जाता है जिससे अँगरेज़ी पढ़ने वाले लड़के दोनों भाषाओं का मिलान कर सकें ।

हिंदी	अध्याय (१)	अँगरेज़ी
उद्देश्य		Subject.
विधेय		Predicate.
	(२)	
संज्ञा		Substantive.
क्रिया		Verb.

हिंदी	अँगरेज़ी
अव्यय	Indeclinable.
(३)	
कर्त्ता	Nominative case.
कर्म	Objective case.
सम्बोधन	Vocative case.
(४)	
विस्तार	Extension or adjunct.
वाक्यच्छेद	Analysis.
(५)	
विशेषण	Adjective.
विशेष्य	Substantive.
संबंध	Genitive case.
क्रियाविशेषण	Adverb.
करण	Instrumental.
संप्रदान	Dative.
अपादान	Ablative.
अधिकरण	Locative.
(६)	
पुरुष	Person.
उत्तम	First person.
मध्यम	Second person.

हिंदी	अँगरेज़ी
अन्य	Third person.
सर्वनाम	Pronoun.
पुरुषवाचक	Personal.
अनिश्चयवाचक	Indefinite demonstrative.
सम्बन्धवाचक	Relative.
प्रश्नवाचक	Interrogative.

(७)

हिंदी	अँगरेज़ी
जातिवाचक	Common noun.
व्यक्तिवाचक	Proper noun.
भाववाचक	Abstract noun.
गुणवाचक	Adjective.
सर्वनाम	Pronoun.

(८)

हिंदी	अँगरेज़ी
लिंग	Gender.
पुँल्लिंग	Masculine.
स्त्रीलिंग	Feminine.
वचन	Number.
एकवचन	Singular.
बहुवचन	Plural.
रूपसाधन	Declension.

हिंदी	अँगरेज़ी
(९)	
अकर्मक क्रिया	Intransitive.
सकर्मक क्रिया	Transitive.
(१०)	
काल	Tense.
वर्तमान	Present.
भूत	Past.
सामान्य	Indefinite past.
आसन्न	Present perfect.
पूर्ण	Past perfect.
संदिग्ध	Doubtful past.
हेतुहेतुमत्	Conditional past.
अपूर्ण	Continuous past.
भविष्यत्	Future.
विधि	Imperative.
संभावना	Optative.
(११)	
कर्तृवाच्य	Active voice.
कर्मवाच्य	Passive voice.
वाच्यपरिवर्तन	Change of voice.

हिंदी	अँगरेज़ी
प्रधान कर्म	Direct object.
अप्रधान कर्म	Indirect object.
प्रेरणार्थक क्रिया	Causal verb.
संयुक्त क्रिया	Compound verb
पूर्वकालिक क्रिया	Absolute construction.
नाम धातु	Denominative.
धातु	Root.

(१२)

क्रियाविशेषण	Adverb.
संबंधवाचक	Preposition.
समुच्चयवाचक	Conjunction.
इंगितबोधक	Interjection.
उपसर्ग	Prefix.

(१३)

समास	Compound.
अव्ययीभाव	Adverbial compound.
तत्पुरुष	Determinative compound.
द्विगु	Numeral compound.
द्वंद्व	Copulative compound.
कर्मधारय	Appositional compound.

हिंदी	अँगरेज़ी
बहुव्रीहि	Attributive compound.
विग्रह	Expounding.
	(१४)
तद्धित	Nominal derivative.
कृदंत	Verbal derivative.
	(१५)
वाक्यच्छेद	Analysis.
वाक्य	Sentence.
असंकीर्ण	Simple sentence.
संकीर्ण	Compound sentence.
निराश्रय	Independent clause.
आश्रित	Dependent clause.
संज्ञावाक्य	Noun clause.
विशेषणवाक्य	Adjectival clause.
क्रियाविशेषणवाक्य	Adverbial clause.
पदव्याख्या	Parsing.
	(१६)
व्याकरण	Grammar.
अक्षर	Letter.
स्वर	Vowel.

हिंदी	अँगरेज़ी
व्यंजन	Consonant.
संयुक्त अक्षर	Compound letter.
ह्रस्व	Short.
दीर्घ	Long.
संधि	Joining.
अनुस्वार	Nasal.
गद्य	Prose.
पद्य	Poetry.
गौरव	Emphasis.

...—वितरित न होने पर कृपया कार्यालय के पते पर वापस करने का कष्ट करें ।